पशु रोगों में होम्योपैथी : एक वैकल्पिक चिकित्सा

डॉ. ए. पी. सिंह
प्रमुख अन्वेषक

डॉ. अशोक गौड़
सहायक आचार्य

।। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।।

पारम्परिक पशुचिकित्सा पद्धति एवं वैकल्पिक चिकित्सा केन्द्र

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर-334001 (राजस्थान)

परेशानी होगी। यदि औषधि पिलाते समय पशु को खांसी उठती प्रतीत होती हो तो तुरन्त ही नाल उसकें मुंह से निकाल लें अन्यथा दवाई फेफड़ों में चली जायेगी और पशु का दम घुट सकता है। दवा देते समय ध्यान रखें कि पशु का मुंह साफ हो ताकि मुंह की गंध से दवा का गुण नष्ट न हो जाये। होम्योपैथिक दवाएँ देने से बीस से तीस मिनट पहले और बाद तक पशु को कुछ न खिलायें, पिलायें। यों तो होम्योपेथिक दवायें ग्लोब्यूल्स (गोली) में मिलाकर भी दी जाती है किन्तु पशु को होम्योपैथिक दवाएँ गोली की जगह पानी में मिलाकर देना या पिलाना ज्यादा लाभदायक है।

पशु मानव का एक आवश्यक लाभदायक उपयोगी और हितैषी मित्र व सेवक है। उसे सदैव चुस्त व दुरूस्त रखना हमारा कर्तव्य हो जाता है। मानव के समान पशु भी बीमार होता है। पशु को बीमार पड़ने पर होम्योपैथी भी वैकल्पिक चिकित्सा के रूप में उपलब्ध है। इस टेक्नीकल बुलेटिन के माध्यम से कुछ बीमारियों में निम्नलिखित होम्योपैथिक दवाओं की जानकारी दी जा रही हैं–

सूखी या खुश्की खांसी :

गले में खरास, कफ न निकलना, पशु के खांसने पर गले से भाप सी निकलना, प्यास की तीव्रता, गर्दन व पैरों में गर्मी प्रतीत होना आदि इस बीमारी के कुछ लक्षण हैं।

होम्योपैथिक चिकित्सा :

बैलाडोना 30, 200 : जब खाँसी का वेग रात में अधिक रहे तथा खाँसते–खाँसते पशु की आँखे लाल पड़ जायें तो इस औषधि का प्रयोग करें।

एकोनाइट 30 : खाँसी की प्रथमावस्था की अचूक औषधि है– अवश्य प्रयोग करें।

ब्रायोनाइट 30, 200 : कब्जियत, साँसें तेज चलें, मल खुश्क हो और सूखी खाँसी होने पर लाभप्रद औषधि।

आईपिकाक 3X, 30 : आक्षेमिक खाँसी घड़घडाहट के साथ हो और रह–रहकर झोंके आयें तब यह औषधि उपयोगी है।

नक्स 200 : पेट की खराबी के कारण खाँसी हो और जिसका वेग सुबह अधिक रहे, ऐसे में यह औषधि अति उपयोगी है।

एण्टिमटार्ट 3X, 30 : पशु अधिक जम्हाई ले, गले में कुछ अटका–सा प्रतीत हो और खाँसते समय चारा बाहर आ जाये तथा घरघराहट की दशा में उपयुक्त दवाई है।

आर्सेनिक 200 : आधी रात के बाद बढ़ने वाली सूखी खाँसी में उपयोगी है।

स्पंजिया 30, 200 : खाँसी जिसमें साँय–साँय की आवाज होती हो।

फॉस्फोरस 6, 30, 200 : मोटे–तगड़े शरीर वाले पशुओं में गर्म स्थान से ठण्डे स्थान पर जाने पर खाँसी का जोर बढ़ जाने पर, सूखी खाँसी के साथ नाक में लाली युक्त रिसता हो तो इस औषधि को देना चाहिए।

विशेष - खाँसी (शुष्क अथवा तर) का निदान करने से पूर्व यह भली प्रकार देख लेना चाहिए कि उसका मूल कारण गर्मी की अतिशयता, ठण्ड लग जाना, बिना ऋतु की वस्तुओं को खा लेना, कोई विषैला प्रभाव या किसी अन्य रोग का होना तो नहीं है।

यदि खाँसी का कारण उदरगत या अन्य कोई व्याधि है तो पहले उसका निदान करके तत्पश्चात् खाँसी की दवा देनी चाहिए। कभी–कभी तो मूल रोग के ठीक होते ही खाँसी स्वयं ही दूर हो जाती है।

जुकाम या सर्दी (Cold)

जुकाम में मुख एवं नासिका मार्ग से कफ जाना, नेत्रों से पानी झड़ना, शरीर में कम्पन, गले में कफ घड़घड़ाना, कभी–कभी छींकें आना, पशु का ठण्ड से सिकुड़कर खड़े रहना आदि लक्षण प्रकट होते हैं। जुकाम की अधिकता में पशु को ज्वर भी हो जाता है। कब्जियत, अधिक गर्मी लग जाना, पसीने से लथपथ शरीर हो तब ठण्डा पानी पीने, सिर में ठण्डी हवा लगने, जाड़े में बाहर बाँधने, वर्षा–ऋतु में बाहर खड़ा रह जाने से बहुत भीग जाने आदि कारणों से पशु को जुकाम हो सकता है।

होमियोपैथिक चिकित्सा :

एकोनाइट नैप 3x,30 : खाँसी का ठसका, सर्दी के साथ ज्वर व छींकें भी आ रही हो तो यह औषधि दें। विशेषतः रोग की प्रथम अवस्था में लाभदायक।

पल्सेटिला 30, 200 : खाँसी की तीव्रता के साथ ही जुकाम पुराना पड़कर नाक से पीले रंग का गाढ़ा स्त्राव निकलने पर यह दवा दें।

कैम्फर 30 : सामान्य ठण्ड व जुकाम की दशा में हितकारी।

मर्क्युरियस 200 : पशु नाक को जुकाम के कारण रगड़े और जुकाम पक रहा हो तब यह दवा कारगर रहती है।

आर्सेनिक 30, 200 : नासिका से पानी बहे, छीकों की अधिकता, आँखों में पानी भरा रहे, तीव्र प्यास लगे तथा जुकाम की अधिकता से नाक के नीचे की त्वचा गलने लगे तब यह दवा अति उत्तम रहती है।

नैट्रमम्यूर 6x,200x : जुकाम जल्दी–जल्दी होता हो और बहुत दिन तक बना रहे तब यह 'बायोकेमिक औषधि' बहुत फायदा करती है।

युफ्रेशिया 30 : यह दवा तब दें जब छींकें आती है तथा आँख–नाक से पानी गिरता है। विशेषतया जब आँख से जो पानी गिरता है, वह आँख के चारों ओर की त्वचा गलाने वाला होता है परन्तु नाक के नीचे की त्वचा नहीं गलती है।

एलियम सिपा 30, 200 : सर्दी के सभी लक्षण मौजूद रहते है। इसमें नाक से जो पानी गिरता है वह त्वचा को गलाने वाला होता है।

मुंह मे छाले या मुंह पाक (Stomatitis)

कारण : गला–सड़ा चारा खाने, दुर्गन्धित पानी पीने आदि से अपच होकर कब्ज के कारण पशु के मुख में जीभ पर छाले हो जाते है जो समय पर उपचार न होने पर सारे गले में और पेट तथा आँतों तक में फैल जाते हैं जिससे पशु दाना–चारा चरने में असमर्थ हो जाता है और कमजोर होकर मर जाता है।

लक्षण : मुख से दुर्गन्ध आना, लार टपकना, सुस्ती, कमजोरी तथा खाने–पीने के प्रति अनिच्छा व जुगाली कम करना आदि।

होमियोपैथिक चिकित्सा :

मर्क्यूरियस 200, 1000 : छालों के कारण गर्मी हो और वे तीव्रता से मुँह, तालु और गले में फैल रहे हों तथा लार अधिक बहने की दशा में यह दवा हितकारी।

जहां से ये दवाईयां नाम एवं पोटेंसी बतलाकर खरीदी जा सकती हैं।

निम्न शक्ति की होम्योपैथिक दवा एक दिन में 3–5 बार तक दी जा सकती है। 200 पोटेंसी की दवा सात दिन में तीन से चार बार दी जा सकती है। 1M, 10M आदि पोटेंसी की दवा पन्द्रह से तीस दिन में एक बार या दो बार दी जाती है। किन्तु यह अनिवार्य नियम नहीं है। पशु का आकार, उम्र, स्थिति, रोग की तीव्रता, पशु की हालत आदि को ध्यान में रखकर पोटेंसी तथा दवा देने के समय का निर्धारण स्वविवेक अथवा डॉक्टर की सलाह से करना चाहिए। पशु की हालत को ध्यान में रखकर दवाई की मात्रा दो खुराकों में समय–अन्तर आदि को अपने अनुभव के आधार पर निर्धारित करना चाहिए।

पशुओं को दवा कैसे दें :

पशु को दो तरह की औषधियाँ दी जाती हैं, प्रथम खिलाने की और दूसरी पिलाने की। खिलाने की दवाएँ या तो वैसे ही खिलाई जाती हैं या फिर जौ के आटे, पेड़े या गुड़ में दी जा सकती है। परन्तु पशु उसे मुंह से निकाल न दें, इस बात को ध्यान रखना चाहिए। पशुपालक प्रायः इस बात को जानते है कि पिलाने की दवाइयाँ नाल के माध्यम से पिलाई जाती है जो कि बांस की छोटी नाल अथवा प्लास्टिक की शीशी हो सकती है। इस विधि में स्वयं पशु के बाईं ओर खड़े हों एवं अपने बायें हाथ से पशु का मुंह खोल दें। दायें हाथ से सावधानीपूर्वक नाल पशु के मुंह के जबड़ों के मध्य में रख दें और नाल से भरी हुई दवा धीरे–धीरे पिलायें तथा पशु की जीभ को न पकड़े और ना ही दबावें, अन्यथा जीभ पकड़ने पर वह दवा को गटक नहीं पायेगा तथा दवा का फेफड़ों में जाने का खतरा बढ़ जाता है। दवा पिलाते वक्त यह सावधानी रखें कि दवा पशु के नथुने में ना जाये अन्यथा उसे सांस लेने में

पारम्परिक या घरेलू चिकित्सा से तात्पर्य देशी या देहाती इलाज से है। जिससे हमारे देश के प्रायः सभी पशुपालक परिचित हैं। देशी चिकित्सा में जो वस्तुयें काम मे ली जाती हैं, वे वस्तुएँ बड़ी आसानी से घर में ही या पंसारी, परचून आदि की दुकानों में मिल जाती है तथा प्रत्येक व्यक्ति इन वस्तुओं से परिचित है।

एलोपैथिक चिकित्सा का अर्थ अंग्रेजी दवाओं से है। बाजार में अंग्रेजी दवाओं के मेडिकल स्टोर्स होते है जहाँ से अंग्रेजी दवायें खरीदी जा सकती है। उपचार हेतु अस्पताल से भी संपर्क कर इलाज कराया जा सकता है, जहां ये दवाइयां भी उपलब्ध होती हे। राजस्थान सरकार द्वारा पशु अस्पतालों में इलाज की सुविधा निःशुल्क उपलब्ध कराई जा रही है।

पारम्परिक एवं एलोपैथिक चिकित्सा प्रणालियों के विषय में तो लगभग सभी व्यक्ति जानते हैं लेकिन हाम्योपैथिक चिकित्सा हमारे ग्रामीण भाइयों के लिए एक नई प्रणाली है। अतः इसको यहां विस्तार से समझाया जा रहा है।

होम्योपैथिक एक लाक्षणिक पैथी है जिसमें बीमारी के लक्षणों को ध्यान में रखकर दवा का चुनाव किया जाता है। एक ही बीमारी में अलग–अलग लक्षणों के आधार पर अलग–अलग दवायें काम में ली जाती है।

होम्योपैथिक में दवा के नाम के पीछे गिनती जैसे 30,200, 1M आदि लिखी रहती है, इन्हें पोटेंसी कहा जाता है। ये दवा की उच्च एवं निम्न शक्ति को प्रदर्शित करती है।

Q (मूल अर्क या मदर टिंचर) से 30 पोटेंसी तक की दवा निम्न शक्ति (लो पावर) की कहलाती है और 200, 1M,10M आदि पोटेंसी की दवा उच्च शक्ति (हाई पावर) की कहलाती है।

जिस प्रकार बाजार में एलोपैथिक दवाओं के स्टोर्स होते हैं उसी प्रकार ''होम्योपैथिक दवाओं'' के भी स्टोर्स होते हैं।

नक्स वोमिका 200, 1000 : कब्जियत की वजह से छाले होने पर।

लैकेसिस 200, 1000 : रोग उग्ररूप में फैल चुका हो, छाले गले तक हो और, मुख से दुर्गन्धित स्त्राव निकल रहा हो तथा गला सूजने की स्थिति में विशेष उपयोगी है।

एसिड नाइट्रिक 200 : छाले लाल व तेज दर्द सहित हो। लार, रक्त व पानी टपकता रहे तो इस दवा को दें, लाभ होगा। यदि किसी गर्म दवा के प्रभाव से छाले हुए हों तब भी यह औषधि हितकारी रहती है।

एसिडम्यूर 200 : यदि छालों के घाव गहरे व नीलापन लिए हों, मसूढ़े और ग्रन्थियाँ फूल रही हों तो इसका प्रयोग करना चाहिए।

एसिड सल्फ 200 : किसी अन्य बीमारी के कारण छाले हुए हों, लार गिरे व दस्त हों तब बहुत लाभप्रद रहती है।

विशेष : केलेन्डुला लोशन मिले हुए बोरिक एसिड में थोड़ा–सा शहद मिलाकर छालों पर लगायें।

लार का अधिक मात्रा में गिरना

कारण व लक्षण : यह व्याधि पेट की खराबी से होती है। इसमें पशु के मुख से लार अधिक गिरती है या उसका मुँह लार से भर जाता है।

होमियोपैथिक चिकित्सा :

लाइकोपोडियम 200 : इस व्याधि की बहुत ही लाभकारी दवा है।

नक्सवोमिका 30 : लाइकोपोडियम से लाभ न होने पर इस दवा को दें।

ब्रायोनिया 30 : लार बहने के साथ ही यदि पाकाशय का दर्द भी हो तो इसका प्रयोग करना ठीक रहता है।

मुख अथवा गुदा से खून का गिरना (Haemolose)

कारण व लक्षण : यह रोग भी पाचन–संस्थान की खराबी से होता है।

होमियोपैथिक चिकित्सा :

हैमामेलिस 1X : यदि रक्त का रंग काला या मटमैला हो तो इस दवा का प्रयोग दिन में 3-4 बार तक करें।

इमिकाक 1X : यदि रुधिर का रंग चमकीला हो तो यह औषधि रोग की दशानुसार दिन में कई बार दें।

तकनीकी मार्गदर्शन हेतु आभार:

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत
कुलपति
राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

प्रो. (डॉ.) त्रिभुवन शर्मा
निदेशक प्रसार शिक्षा
राजुवास, बीकानेर

-:: सम्पर्क सूत्र ::-

प्रो. (डॉ.) ए. पी. सिंह
प्रमुख अन्वेषक
9414139188

डॉ. अशोक गौड़
सहायक आचार्य
9461906288

पारम्परिक पशुचिकित्सा पद्धति एवं वैकल्पिक चिकित्सा केन्द्र, बीकानेर-334001(राज.)

मुद्रक : डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, बीकानेर मो. : 9784105819